145 P
939
H

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1238
10/21

आह्वानांक Call No.

अवाप्ति सं० Acc. No. 939

4/2011

891.431 D569N

❁ वन्देमातरम् ❁

नौरंग गरजना

प्रकाशक—

उमा शंकर दीक्षित,

इलाहाबाद।

प्रथमबार] [मूल्य एक आना

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 939
Date 27.12.71
GOVT. OF INDIA

❀ नौरंग गरजना ❀

जालिम हमारे ऊपर, गोली चला रहे हैं,
हम तो शहीद हो कर जन्नत को जा रहे हैं।

पर याद रखना तुम भी जालिम थे रह न जाये,
कुछ दिन में हम भी वापस अब फेर आ रहे हैं।

देखो हमारा हक़ है, हम हिन्द के हैं मालिक,
इस हिन्द के लिये हम यह सुर छिड़ा रहे हैं।

लानत है यार उनको जो हैं गुलाम इनके,
कहने से दुश्मनों के गोली चला रहे हैं।

ऐ भाइयो पुलिस के, ऐ भाई फौज वालो,
हम तो तुम्हारे हक़ में इन्साफ चा रहे हैं।

यह धर्म है तुम्हारा तुम छोड़ दो गुलामी,
हम आपकी वजह से यह खूं बहा रहे हैं।

यह आरजू है मेरी तुम मर मिटो इसी पर,
बिन स्वराज्य के न हटना लो हम तो जा रहे हैं।

❀ ❀ ❀

धरसाना को चलो

चलो वीरो धरसाना को, साज लो अपनी सैना को ।
सात वर्ष के बाद फिर, आया पर्व अमोल ।
घर २ से निकलो चलो, भारत की जय बोल ॥
न डरना गोले गोली को ॥ साज०
वही लगन नेता वही, वही बृटिश सरकार ।
फिर क्यों बैठे साधि चुप, वीरो हिम्मत हार ॥
लगा लो चन्दन रोली को ॥ साज०
आती हो उस ओर से, छर्रों की बौछार ।
इधर मची हो प्रेम से, जय जय कार पुकार ॥
मिटा दो ब्रिटिश ठठोली को ॥ साज०
घर घर में होवे ध्वनित, भव्य भाव भरपूर ।
ब्रिटिश-गर्व सत्याग्रही, कर दें चकना चूर ॥
जला दें जलता होली को ॥ साज०

❀ ❀ ❀

गोली चला के मारा

बेकस को तूने इर्विन गोली चला के मारा,
क्या था बिगाड़ा तेरा जिनको सता के मारा ।
किस वास्ते ए जालिम मशीन गन मंगाई,
फायर को भी चलाया ये दिन दिखा के मारा ।
विधवा हजारों को ही पंजाब में बनाया,
पहिले तो बन चुकी थी और अब बना के मारा ।

विधबा विलाप करती ऐ पापी योरप वासी,
किस वास्ते पती को बाग़ी बना के मारा।
बालक की माता रोती ओ ज़ुल्मी दुष्ट इर्विन,
हा लाल को भी तूने रोते लिटा के मारा।
वह दुध मुहा बच्चा बाग़ी बनाया तूने,
कुछ भी दया न आई गोली चला के मारा।
बाग़ी रहा वह बालक तो गर्भ से हो बाग़ी,
ऐसा करो कन्हैया मुझको रुला के मारा।

❀ ❀ ❀

रंग जमाने के लिये

ज़ुल्म डायर ने किया था रंग जमाने के लिये,
हिन्द वालों को मुसीबत में फंसाने के लिये।
खून से पंजाब के डायर ने लिखी डायरी,
रूबरू रख दी मेरी तबियत जलाने के लिये।
पेशावर में शहीदों की बने ग़र यादगार,
जायंगे आशिके वतन आंसू बहाने के लिये।
जिसने तन मन धन दिया था जंग योरुप पर निसार,
तैयार बैठे हैं अब उसके मिटाने के लिये।
पोल खुलती देख ली तो ज़ब्त करने को चले,
ज़ब्त कर लो देखते हैं कितना करते ज़ब्त हो।
सर हथेली पर अगर रक्खा तो डर किस बात का,
सर कटाने के लिये है जान जाने के लिये।

❀ ❀

रण भेरी बजा दो

बजा दो रण भेरी रण धीर।

चला दो चक्र निजो अनुभूत,
दिखा दो रण-कौशल अद्भूत,
जननि के बन कर सच्चे पूत,
बढ़े चलो सैनिको समर में अरि समूह को चीर। बजा०
तुमुल ध्वनि गूंजे नभ हर हर,
शत्रु भय मान कंपे थर थर,
त्याग रण-भूमि भगें भर भर,
विजय-श्रीकर प्राप्त मातु की काट देउ जंजीर। बजा०

❀ ❀ ❀

बेकसी है दुनिया में

ज़बां को बन्द करें. या करें असीर मुझे।
मेरे ख्याल को बेड़ी पिन्हा नहीं सकते।।
ये बेकसी भी अजब, बेकसी है दुनिया में।
कोई सताये हमें, हम सता नहीं सकते।।
चिराग़ कौम का, रौशन है अर्श पर दिलके।
इसे हवा के फरिश्ते बुजा नहीं सकते।।

❀ ❀ ❀

जेल यात्रा

खुद जेल में जाकर बता दिया स्वराज्य का मन्दिर जेल में है।
सिवा जेल के रस्ते कौन से हैं, जब कौम का रहवर जेल में है॥

सब मुल्क के आदिल औ दिमाग़, हिन्दोस्तां के चश्म चिराग़।
हर एक खिरद् वर जेल में है, यानी हर लीडर जेल में है॥

हर रिश्वत खोर व चुगुल खोर हर जालिम ऐश उड़ाता है।
बदतर से बदतर मौज में हैं, बहतर से बहतर जेल में है॥

जिस दिल में थी बैराग्य निहां, थी हुब्बे वतन की आग जहां।
जो शख्श भी थे बेलाग यहां, उस सख्श का बिस्तर जेल में है॥

खुद काम होतुम बदनामहो तुम, नाकाम होतुम वोगुलाम होतुम।
हैं गुलामही रहते कालिज (बंगलों में, आजादका घरतो जेलमें है॥

सुख भोग तजो भाई अब तो, संग्राम छिड़ा आजादी का।
हैं गुलाम ही सोते गद्दों में, जब देश की नेता जेल में है॥

क्या उलटे तरीके निकले हैं, इन्सानों के एजाज के अब।
सब कंकड़ पत्थर सड़कों पर, भाई (लाल) जवाहर जेल में है॥

हैं शेर बबर भारत का अब, जिन्दाने फरंग के पिंजड़े में।
लो लाठी गोली सीने में जब, गांधी महात्मा जेल में है॥

❀ ❀ ❀

राधेश्याम की रामायण के ढङ्ग पर

चलने दो हाथ निहत्थों पर,
जत्थों पर जत्थे आवेंगे।

गांधी के एक इशारे पर,
लाखों मत्थे चढ़ जावेंगे॥

तोड़े, क़ानून किताबों का,
छापेख़ाने—अख़बारों का।
इस अनाचार के शासन को,
हाथों-हाथों चर जावेंगे॥

मरते हैं वीर समर में ही,
कायर सौ बार मरा करते।
यह जीवन जाल ज्वाल हुआ,
मर कर भी अमर कहायेंगे॥

भागों से स्वर्ण सुयोग मिला,
सेनापति गांधी सा पाया।
इसलिये "दास" रण गंगो में,
खुल करके खूब नहावेंगे॥

❀ ❀ ❀

इर्विन तेरी रफ्तार से

ज़ुल्म की हद हो रही है, इर्विन तेरी रफ़तार से,
देखना पछतायेगा इस ज़ुल्म की तकरार से।
है हमारा देश भारत प्राण से प्यारा हमें,
क्या खता गर मांग लो आजादगी सरकार से।
आये थे मेहमान बन कर तुम हमारे देश में,
कर रहे ज़ुल्मो सितम इन बेकसों को मार से।
हमने सर तक कटाये थे तुम्हारे वास्ते,
आज तक बोले न थे कुछ भी तेरे इकरार से।

तू भी अब क़ातिल संभल कर देख ले क्या हो रहा,
कट रहे लाखों ही सर तेरे फ़क़त हथियार से।
खूं शहीदों का रंग लायेगा तू देखियो,
क्या सजा मिलता है तुझको ऐसे अत्याचार से।
तू मिटा चाहे हमको जितना, मगर हम चुप खड़े,
खुद सजा पायेगा तू, ख़ालिक उस दरबार से।

❀ ❀

काकोरी के शहीद

थे जंगे आजादी में काकोरी के शहीद।
फांशी पी गये झूल वो काकोरी के शहीद॥
चलती वो ट्रेन में था सरकार की खजाना।
धीरो में दिलावर थे वो ककोरी के शहीद॥
नाना धूधू पंथ का खाका लिया था खींज।
देते थे डांका ट्रेन में काकोरी के शहीद॥
शाहे जहां पुर रहते थे असफाक उल्ला खां।
बिशमील राम प्रसाद थे काकोरी के शहीद॥
काशी के जीतेन्द्र लाडिले और बकशीजी भी आये थे।
धोके से पकड़े गये वो काकोरी के शहीद॥
आजादी के दिवाने से वो शेरे दिल मजबूत।
करते थे काम जोरों में काकोरी के शहीद॥
वतन के नव युवकों से करते थे वे अपील।
होते हैं रुख़्सत वतन से काकोरी के शहीद॥

❀ ❀ ❀

राष्ट्रीय झन्डा गान

विजई विश्व विश्व का प्यारा।
झन्डा घर घर लगे हमारा॥

मन में मोद बढ़ाने वाला, शान्ति शक्ति दर्शाने वाला।
अतिशय जोश दिलाने वाला, लगता बड़ा तिरंगा प्यारा॥

झन्डा घर घर लगे हमारा।
विजई विश्व विश्व का प्यारा॥

स्वतन्त्रता को दिखलायेगा, दुश्मन का दिल दहलायेगा।
पास न संकट भय लायेगा, कभी न भारत से हो न्यारा॥

झन्डा घर २ लगे हमारा।
विजई विश्व विश्व का प्यारा॥

इस झन्डे के बल से भाई, निश्चय हो स्वराज सुख दाई।
मातृ भूमि को लो अपनाई, अर्पण कर तन मन धन सारा॥

झन्डा घर २ लगे हमारा।
विजई विश्व विश्व का प्यारा॥

वीरो समर भूमि में आओ, अबतो खेल जानपर जाओ।
इस झंडे की शान बनाओ, रिपुओं का दिल जिससे हारा॥

झन्डा घर २ लगे हमारा।
विजई विश्व विश्व का प्यारा॥

जीवन बार २ नहिं पाना, "शर्मा" ध्यान सदा उर लाना।
इस भीषण रण में आ जाना, तभी लक्ष हो पूर्ण तुम्हारा॥

झन्डा घर २ लगे हमारा।
विजई विश्व विश्व का प्यारा॥

झण्डा गान

झण्डा ऊंचा रहे हमारा।
विजयी विश्व तिरंगा प्यारा॥

सदा शक्ति बरसाने वाला, प्रेम सुधा सरसाने वाला।
वीरों को हर्षाने वाला, मातृ भूमि का तन मन सारा॥
झण्डा ऊंचा रहे हमारा।

स्वतन्त्रता के भीषण रण में, लखकर जोश बढ़े क्षण क्षण में।
कांपे शत्रु देखकर मन में, मिट जावे भय संकट सारा॥
झण्डा ऊंचा रहे हमारा।

इस झण्डे के नीचे निर्भय, लें स्वराज्य यह अविचल निश्चय।
बोलो भारत माता की जय, स्वतन्त्रता हो ध्येय हमारा॥
झण्डा ऊंचा रहे हमारा।

आओ प्यारे वीरो आओ, देश धर्म पर बलि बलि जाओ।
एक साथ सब मिलकर गाओ, प्यारा भारत देश हमारा॥
झण्डा ऊंचा रहे हमारा।

इसकी शान न जाने पावे, चाहे जान भले ही जावे।
विश्व विजय करके दिखलावें, तब होवे प्रण पूर्ण हमारा॥
झण्डा ऊंचा रहे हमारा।

Surju Lal Raja Press, Rani Mandi Allahabad.